रिकार्ड :- तुम्हे पाकर हमने.... ओम शान्ति प्रातःक्लास 9-4-67

यह किसने कहा कि तुम्हें पाकर सारे जहान की बादशाई पा ली। अभी तुम स्टुडेन्ट भी हो तो बच्चे भी हो। तुम जानते हो कि बेहद का बाप हम बच्चों को विश्व का मालिक बनाने के लिये आये है। उनके सामने हम बैठे है। अभी हम राजयोग सीख रहे है। अर्थात विश्व का क्राउन प्रिंस प्रिंसेज बनने जा रहे है अथवा तुम यहाँ पढ़ने आये हो यह गीत तो भक्ति मार्ग का गाया हुआ है। खुशी से बच्चे जानते है कि हम विश्व का महाराजकुमार महाराजकुमारी बनेंगे। बाप है ज्ञान सागर। सुप्रीम रूहानी टीचर। रूहों को बैठ पढ़ाते है। आत्मा इन शरीर रूपी कर्मेन्द्रियों दवारा जानती है कि हम बाप से विश्व क्राउन प्रिन्स प्रिन्सेज बनने लिये इस पाठशाला मे बैठे है। कितना नशा होना चाहिये। अपने दिल से पूछो इतना नशा हम स्टुडेन्टस मे है? यह कोई नई बात भी नही है। हम कल्प-2 विश्व के क्राउन प्रिन्स प्रिन्सेज बनने लिये बाप के पास आते है। जो बाप, बाप भी है टीचर भी है। बाप पूछते है तो सब कहते है हम तो सूर्यवंशी क्राउन्ड प्रिन्स प्रिन्सेज वाले -न बनेंगे। अपने दिल से पूछना चाहिये हम ऐसा पुरुषार्थ करते है? बेहद का बाप जो स्वर्ग का वर्सा देने आये है वो हमारा बाप टीचर सतगुरु भी है। तो जरूर हमको वर्सा भी उतना ऊँच ते ऊँच देंगे। देखना चाहिये कि हमको इतनी खुशी है कि हम आज पढ़ते है कल क्राउन प्रिन्स होंगे? क्योकि यह संगम है ना। अभी इस पार हो। वहाँ तो सर्वगुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण बनकर के जावेंगे। हम ऐसे लायक बने है? अपने से पूछना होता है। एक नारद भक्त की बात नही है। तुम सब भक्त हो। अभी बाप भक्ति दुर्गति से छुड़ाते है। तुम जानते हो हम बाप के बच्चे बने है। उनसे वर्सा लेना है। विश्व का क्राउन प्रिन्स बनने आये है। बाप कहते है भल अपने गृहस्थ व्यवहार मे रहो, वानप्रस्थ अवस्था वालों को अपने घर मे नही रहना होता है। और कुमार कुमारियाँ भी गृहस्थ व्यवहार मे नही है। उनकी भी स्टुडेन्ट लाईफ है। ब्रह्मचर्य मे ही पढ़ते है। अब यह पढ़ाई है बहुत ऊँच। इसमे पवित्र बनना है हमेशा के लिये। वो तो ब्रह्मचर्य मे पढ़ कर फिर विकार मे जाते है। यहाँ तुम ब्रह्मचर्य मे रह कर पूरी पढ़ाई पढ़ते हो। बाप कहते है मै पवित्रता का सागर हूँ। तुमको भी बनाता हूँ। तुम जानते हो हम आधा कल्प पवित्र रहे थे। फिर बाप से प्रतिज्ञा की थी कि क्यो नही हम पवित्र बन कर बना कर और विश्व का मालिक बनेंगे। कितना बड़ा बाप है। भल है साधारन परन्तु आत्मा को नशा चढ़ता है कि बाप आये है पवित्र बनाने। कहते है तुम विकारों मे जाते-2 वेश्यालय मे आकर पड़े हो। तुम सतयुग मे पवित्र थे। यह राधा कृष्ण पवित्र क्राउन प्रिन्स प्रिन्सेज है ना। रूद्र माला भी देखो, विष्णु की माला भी देखो। रूद्र माला सो ही फिर विष्णु की माला बनती है। रूद्राक्ष की माला बनती है तो उसमे आँखे दिखाते है। रूद्र माला का सिर्फ दाना होता है। तो तुम पहले आत्माये दाने मिसल थी। फिर शरीर मे आने से आँखे ~~मिलती है~~ मिलती है। पहले रूद्र माला बन फिर विष्णु की माला बनेंगे। इसके लिये पहले तो बाप समझाते है कि बाप को निरन्तर याद करो। अपना टाईम वेस्ट मत करो। इन कौड़ियों पिछाड़ी पड़ कर कदर मत बनो। बाप ने कदरदैप्स नाम तो रखा है ना। कदर चने खाते है। अभी तुमको बाप रत्न दे रहे है। फिर भी अगर कौड़ियाँ अथवा चनो पिछाड़ी ही जावेंगे तो क्या हाल होगा। रावण की जेल मे कैद हो जावेंगे। बाप आकर रावण की कैद से छुड़ाते है। कहते है देह सहित सभी देह के सम्बन्धों का त्याग करो। अपने को आत्मा निश्चय करो। बाप कहते है मै कल्प-2 मे ही आता हूँ। भारत वासी मनुष्यों को आकर विश्व का क्राउन प्रिन्स प्रिन्सेज बनाता हूँ। कितना सहज पढ़ाते है। ऐसे भी नही कहते है कि कोई 8, 4 घण्टा आकर बैठो। नही गृहस्थ व्यवहार मे रहते अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो तो तुम पतित से पावन बन जावेंगे। विकार मे जाने वाले को पतित कहा जाता है। देवताये पावन थे इसलिये ही तो उनकी महिमा करते थे। बाप समझाते है वो है अल्प काल क्षण भंगुर का सुख है। सन्यासी ठीक कहते है। परन्तु उनको यह पता नही कि देवताओं

देवताओं को कितने सुख होते है। नाम ही है सुखधाम। यह है दुःखधाम। इन बातों का दुनियां में किसको भी पता नहीं है। वाप ही आये कल्प-2 समझाते है। देही-अभिमानी बनाते है। अपने को आत्मा स समझो। हम आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। तुम आत्मा हो नो कि देह। देही के तुम मालिक हो। देही तुम्हारा मालिक नही। 84जन्म लेते-2 अव तुम तमोप्रधान वन गये हो। तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनो ही पतित बनी है। देह-अभिमानी बनने कारण तुमसे पाप हुये है। अव तुमको देहीअभिमानी बनना है। मेरे साथ वापस घर चलना है। आत्मा और शरीर दोनो को शुध बनाने के लिये वाप कहते है मनमनाभव। गीता में भी अक्षर है। वाप ने कब आकर राजयोग सिखाया यह दुनियां नही जानती। गाते भी है ज्ञान दिन भक्ति है रात। ज्ञान स्वर्ग अज्ञान भक्ति नर्क। बरोबर सतयुग त्रैता में हमसो दैवी देवता थे फिर हम सो क्षत्री बने है। फिर रावण राज्य में हम से वैश्य शुद्र बनते है। अब फिर वाप आकर हम बच्चों को पढ़ा रहे है। समझाते है-कौड़ियों पिछाड़ी तुम जानहीरे गंवाओं। तुमको रावण ने आधा कल्प फ्रीडम(आजादी) दी है। अव फिर फ्रीडम करवा रहे है। आधा कल्प तुम फ्रीडम राज्य करो। वहां पांच विकारों का नामनही है। अब श्रीमत पर चलकर श्रेष्ट बनना है। अपने से पूछो हमारे में विकार कहां तक है। एक तो वाप कहते है कि वस मामेकम् याद करो और कोई भी लड़ाई झगड़ा भी मत करो। नही तो तुम पवित्र कैसे बनेंगे। तुम यहां आये ही हो पुरुषार्थ कर माला में पिरोये जाने लिये। नोपास होंगे तो फिर माला में पिरोये तो नां जा सकेंगे नो। कल्प-2 की वादशाही गंवा देंगे। फिर अन्त में वहुत पछताना पड़ेगा। इस पढ़ाई में भी रजिस्टर रहता है। यह भी पढ़ाई है। सवेरे को उठ कर तुम आपेही पढ़ो। दिन में तो कर्म करना ही है। फुरसत नो मिलती है। भक्ति भी मनुष्य सवेरे उठ कर करते है। यह तो है ज्ञान मार्ग। भक्ति में भी पुजा करते-2 वुधी में फिर किसी नो किसी देहधारी की याद आ जाती है। यहां भी तुम वाप को याद करते हो फिर फलाना आद याद आ जाता है। जितना वाप की याद में रहेंगे उतना पाप कटते जावेंगे। पुरुषार्थ करते-2 जब प्योअर बन जावेंगे तव माला बनेगी। पुरा पुरुषार्थ नां किया तो प्रजा में चले जावेंगे। अच्छी रीती योग लगावेंगे, पढ़ेंगे, अपनी वेग वैगेज भविष्य लिये ट्रान्सफर कर देंगे तो रिटर्न में भविष्य में मिल जावेगा। ईश्वरअर्थ देते है तो दूसरे जन्म में उसका रिटर्न मिलता है नां। अभी वाप कहते है मैं डायरेक्ट आया हूं अभी तुम जो कुछ करते हो सो अपने ही लिये। मनुष्य दान पुण्य करते है वो है इन डायरेक्ट। इस समय में वाप को मदद की हुई है तो ~~उसकी~~ उसकी प्रारब्ध भक्ति मार्ग तक भी चलती है। इस समय तुम वाप को वहुत मदद करते हो जानते हो कि यहपैसे तो खत्म हो जावेंगे इससे तो क्यो नो वाप को मदद करे। वाप राजाई कैसे स्थापन करेंगे। नां कोई लश्कर वां सैना आद है। नो हथियार आद है। सब कुछ है गुप्त। कन्या को दहेज कोई-2 गुप्त देते है। पेटी बन्द कर चावी हाथ में दे देते है। कोई-2 वहुत शो करते है। कोई-2 गुप्त दे देते है। वाप भी कहते है तुम सजनियां हो। तुमको हम विश्व का मालिक वनाने आये है। तुम गुप्त मदद करते हो। यह आत्मा जानती है। वाहर में सभका कुछ भी नही है। कोई समझेंगे क्या कि यह ब्र,कु, किंगड्म स्थापन कर रही है। तुम ही जानते हो। हथियार आद कुछ भी नही है। भक्ति मार्ग में मनुष्यों की वुधी कितनी नानसेन्स वन जाती है। यह है ही विकारी पतित दुनियां। 5,6 बच्चे पेट चीर करपैदा करते है तो कदर वन्दिरयां हुये नां। पेट चीर कर बच्चों को निकालने का एक फैशन हो गया है। अभी तो दवाईयां आद भी निकालते है कि बच्चा पैदा नां हो। परन्तु मूत तो पीते पिलाते रहते है नां। कुछ भी करें परन्तु सृष्टी की वृधी तो होनी ही है। आत्माओं को आना है जरूर। जन्म तो और ही जास्ती होते है। कहते भी है इस हिसाव से अनाज पूरा नां होगा। यह है ही वन्दर आसुरी वुधी। तुम बच्चों को अभी ईश्वरिय वुधी मिली है। भगवान पढ़ाते है तो उनका कितना रिगार्ड रखना चाहिये। कितना पढ़ना चाहिये। कई बच्चे है जो पढ़ाई का

ठीक ही नही है। तुम बच्चों को यह तो खुशी में रहना चाहिये ना कि हम बाबा द्वारा क्राउन प्रिन्स बन रहे है। अब बाप कहते है मेरी मत पर चलो। बाप को याद करो। बार-2 कहते है हम भूल जाते है। स्टुडन्ट कहे हम लेसन भूल जाते है, तो टीचर क्या करे। याद नही करेंगे तो तुम्हारा विकर्म विनाश नही होंगे। क्या टीचर सब पर कृपा वा आशीर्वाद करेंगे कि पास हो जाओ। यहाँ भी आशीर्वाद वा कृपा की बात नही है। बाप कहते है पढो। भल धन्धा आद करो। परन्तु पढ़ना जरूर है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनो। औरों को भी रास्ता बताओ। दिल से पूछना चाहिये हम बाप की खिदमत में कितना है। कितनों को आप समान बनाते है। त्रिमूर्ती चित्र तो सामने रखा है। यह शिव बाबा है। यह ब्रह्मा है। इस पढ़ाई से यह बनते है। फिर 84जन्मों बाद यह बनेंगे। शिव बाबा ब्रह्मा तन में प्रवेश कर ब्राह्मणों को यह बना रहे है। तुम ब्राह्मण बने हो। तुम अपनी दिल से पूछो हम पवित्र बने। दैवी गुण धारण करते है। पुराने देह को भूले है? अब तो पुरानी जुत्ती है ना। आत्मा पवित्र बन जावेगी तो जुत्ती भी फर्स्टक्लास मिलेगी। यह पुराना चोला छोड़ नया चोला लेंगे। यह चक्र तो फिरता है। आज पुरानी जुत्ती में है। कल यह देवता बनने चाहते हो। भविष्य आधा जन्म के लिये यह विश्व का क्राउन प्रिन्स बनते है। बाप द्वारा। उस हमारी राजाई को कोई भी छीन सके ना सके। तो बाप की श्रीमत पर चलना चाहिये ना। अपने से पूछो हम कितना याद करते है। कितना स्वदर्शन चक्रधारी बनते है और बनाते है। जो करेंगे सो पावेंगे। बाप रोज पढ़ाते है। सबके पास मुरली जाती है। अच्छा ना भी मिले। 7रोज का कोर्स तो मिल गया ना। बुद्धी में नालेज आ गई। शुरू में तो भठी बनी कोई पक्के कोई कच्चे निकल गये। क्योंकि माया के तूफान भी तो आते है ना। 6,8वर्ष पवित्र बने फिर अपने देह-अभिमान में आकर घात कर लेते है। माया बड़ी दुस्तर है। आधा कल्प माया से हार खाई है। अभी भी हार खावेंगे तो अपना पद ही खो बैठेंगे। नम्बरवार मर्तबे तो बहुत है ना। कोई राजा कोई वजीर कोई प्रजा। कोई को हीरे जवाहरों के महल। प्रजा में भी कोई तो बहुत शाहूकार होते है। हीरे जवाहरों के महल होते है। यहाँ भी देखो प्रजा से कर्जा उठाते है। तो प्रजा शाहूकार ठहरी या राजा? अन्धेरी नगरी.... यह सब अभी की बातें है। अब तुम बच्चों को यह निश्चय रहना चाहिये कि हम विश्व का क्राउन प्रिन्स बनने लिये पढ़ते है। हम बैरिस्टर वा इंजीनियर बनेंगे यह स्कूल में कब भूल जाते है क्या? यहाँ तो चलते-2 माया का तूफान लगने से पढ़ाई भी छोड़ देते है। बाप बच्चों को रिपीट करते है कि अच्छी रीती पढ़ो तो अच्छा पद पावेंगे। बाप की दाढ़ी की लज्जा रखो। तुम ऐसे गन्दा काम करेंगे तो नाम बदनाम करेंगे। सत बाप सत टीचर की निन्दा सतगुरू की निन्दा कराने वाले ऊँच पद पा नही सकेंगे। इस समय तुम हीरे जैसा बनते हो तो कौड़ियों पिछाड़ी क्यों पड़ना चाहिये बाबा को साक्षात्कार हुआ तो झट कौड़ियों को छोड़ दिया। और 21जन्मों लिये बादशाही मिलती है। फिर यह क्या करेंगे? सब दे दिया। हम तो विश्व की बादशाही लेते है। यह भी जानते हो विनाश होना है। अब नही पढ़ा तो ट्रूलेट हो जावेंगे। पछताना पड़ेगा। बच्चों को सब साक्षात्कार हो जावेगा। बाप कहते है तुम बुलाते भी हो कि हे पतित पावन आओ। अब मै पतित दुनियाँ में तुम्हारे लिये आया हूँ। और तुमको कहता हूँ कि पावन बनो तो फिर तुम बार-2 गन्द में गिर पड़ते हो। मै तो कालों का काल हूँ। सब को ले जाऊँगा। स्वर्ग में जाने के लिये बाप आकर रास्ता बताते है। नालेज देते है कि यह सृष्टी चक्र कैसे फिरता है। यह है बेहद की नालेज। जिन्होंने कल्प पहले पढ़ा है वो ही आकर पढ़ेंगे वो भी साक्षात्कार होता रहता है। निश्चय हो जावे कि बाप आये है जिस भगवान से मिलने लिये इतनी भक्ति की वो यहाँ आये है तो ऐसे भगवान से हम मुलाकात तो करें। तो कितने हुलास खुशी से भागे आकर मिलें। अगर पक्का निश्चय हुआ तो। ठगी की बात नही। ऐसे भी बहुत है पवित्र बनते नही पढ़ते नही बस चलो बाबा के पास। बाबा जी कहते है भावना चाहिये। मै जाता हूँ। ऐसे भी ठग घूमने फिरने आ जाते है। ओम